COMSYN

COMSYN/BSE/2023-24 **Date: 26th February, 2024**

Online filing at: www.listing.bseindia.com and https://neaps.nseindia.com/NEWLISTINGCORP/login.jsp

To, BSE Limited Phiroze Jeejeebhoy Tower, Dalal Street, Mumbai (M.H.) 400 001 **BSE CODE:539986**	To, National Stock Exchange of India Limited Exchange Plaza, C-1, Block G, Bandra Kurla Complex, Bandra (E), Mumbai- 400051 **NSE SYMBOL: COMSYN**

Sub: Submission of Press Clipping published in the Nai-duniya Newspaper dated 25.02.2024.

Respected Sir/Madam,

Pursuant to the Regulation 30 read with Schedule III Part B of Part A of the SEBI (LODR) Regulations, 2015, regarding application of the guidelines for materiality as specified in Regulation 30 sub regulation (4) of the SEBI (LODR) Regulations, 2015.

We herewith enclose the newspaper advertisement published on 25.02.2024 in Naiduniya Newspaper Hindi edition.

We request you to please take our above said information for your reference and record.

Thanking you
Yours faithfully
FOR, COMMERCIAL SYN BAGS LIMITED

POOJA CHOUKSE
Digitally signed by POOJA CHOUKSE
Date: 2024.02.26 14:40:45 +05'30'

CS POOJA CHOUKSE
COMPANY SECRETARY &
COMPLIANCE OFFICER
Encl. a/a

अवसर को समझा, मेहनत को चुना... इस तरह सफलता का ताना-बाना बुना

नईदुनिया
नाम ही काफी है

कहा जाता है कि जीवन में आगे बढ़ने का एक न एक मौका तो सभी को मिलता है। बस लोगों को उस मौके को पहचानने और उस दिशा में मेहनत करने की आवश्यकता होती है। समय पर उस मौके को पहचान कर उसका लाभ उठाने वाले लोग आगे निकल जाते हैं और जो मौके को गंवा देते हैं, वे पीछे रह जाते हैं। आज नाम ही काफी में एक ऐसे परिवार की कहानी, जिसने अपने जीवन में मिले अवसर को न केवल पहचाना बल्कि कठोर मेहनत से उस मौके को सफलता में भी बदल लिया।

रवि चौधरी

अनिल चौधरी

यह कहानी है कमर्शियल सीन बैग लिमिटेड कंपनी के अनिल चौधरी और उनके भतीजे रवि चौधरी की। धार जिले के धामनोद से इंदौर आकर इस परिवार ने कृषि व्यवसाय से जुड़ी सामग्री की दुकान खोली। किंतु यहां आकर पाया कि किसानों की आवश्यकताएं तो अन्य चीजों की भी हैं। अतः इस अवसर को भांपते हुए उन्होंने खुद की निर्माण यूनिट ही शुरू कर दी। उस समय परेशानी तो आई, लेकिन चाचा-भतीजे की जोड़ी हर मुश्किल का सामना करते हुए आगे बढ़ गई। कमर्शियल सीन बैग लिमिटेड कंपनी के अनिल चौधरी और उनके भतीजे रवि चौधरी बताते हैं- हमारा परिवार मूलतः राजस्थान का रहने वाला है। वहां से कभी हम धामनोद आए थे और वहां कृषि व्यवसाय की दुकान संचालित करने लगे। इसके बाद हमने इंदौर आकर छावनी में भी अपना पैतृक कृषि व्यवसाय का व्यापार किया। उन दिनों यूरिया खाद जूट की बोरी में मिलता था, लेकिन किसानों की मांग थी कि यूरिया खाद उन्हें प्लास्टिक की बोरी में मिले ताकि न तो खाद खराब हो और न ही वह बेजा बिखरकर बर्बाद हो। इसके लिए हम खाद बनाने वाली कंपनियों से लगातार मांग करते रहे। तभी एक खाद कंपनी के संचालक ने हमसे कहा कि हमारे पास संसाधन नहीं है। तुम ही इसे बनाना शुरू कर दो। इसके बाद चचा अनिल और भाई स्व. समरेश ने मिलकर पीथमपुर में प्लास्टिक बैग बनाने की यूनिट डाल दी। यहां पर जंबो बैग, तिरपाल, खाद की बोरी आदि बनाई जाती हैं। इसके माध्यम से यहां करीब 2500 लोगों को रोजगार भी दे रहे हैं।

विदेश तक भी सप्लाय

रवि बताते है- हमने गुणवत्ता को सर्वोपरि रखा, इसलिए सफलता मिलती चली गई। यही कारण है कि हमारी कंपनी सिर्फ इंदौर, मध्य प्रदेश या देश तक ही सीमित नहीं है, बल्कि विदेश में भी हमारे बनाए प्लास्टिक बैग सप्लाय होते है। वहां पर भी हमारे उत्पादों की मांग बढ़ती जा रही है। यह हमारी पारिवारिक एकता, सामूहिक मेहनत और संघर्ष के दम पर संभव हुआ। इस व्यवसाय में अब नई पीढ़ी के प्रमित और आशय भी शामिल हो गए है। अब परिवार के पास पेट्रोल पंप, कोल्ड स्टोरेज, मोहरा सीड्स आदि व्यवसाय भी है।

हर माह महिला कर्मचारियों को देते हैं सेनेटरी पैड

अनिल चौधरी ने बताया कि कंपनी में कार्यरत सभी महिला कर्मचारियों को सैलरी के साथ ही सेनेटरी पैड भी वितरित किए जाते है, ताकि वे बीमारियों से बचे रहें। इसके साथ ही कर्मचारियों के उन बच्चों की पढ़ाई में भी मदद की जाती है, जो पढ़ाई में अच्छे है। कर्मचारियों की बेटी और महिला कर्मचारियों के विवाह पर उन्हें कन्यादान स्वरूप सिलाई मशीन दी जाती है, ताकि वह शादी के बाद खुद का व्यवसाय भी शुरू कर सके।

कोरोना में मिला सरकार का सहयोग

कोरोना कालखंड के समय में एक तरफ जहां कई व्यवसाय बंद होने की कगार पर पहुंच गए थे, वहीं इनके व्यवसाय को सरकार की मदद से पुनः उड़ान मिली। रवि बताते है कि कोरोना के समय भी फैक्ट्री को संचालित करने में सरकार का सहयोग मिला। उस दौरान किसानों के गेहूं की सरकारी तुलाई होनी थी। उस गेहूं को रखने के लिए बैग की आवश्यकता थी। तब सरकार की ओर से हमें बैग बनाने की अनुमति मिली और भरसक कोरोना में भी हमारी मशीने धड़ाधड़ बैग बनाती रही।

आई कई मुश्किलें, सबसे कुछ न कुछ सीखा

रवि बताते है कि प्लास्टिक बैग को लेकर कई मुश्किलें आई। जैसे, प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाएं जाने के मामले में हमें काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा। हमें जूट के बैग बनाने वालों के विरोध का भी सामना करना पड़ा। इसके बाद एक समय ऐसा आया कि चारों ओर से हो रहे घनघोर प्रतिरोध के कारण हमेशा छाने लगी थी। लेकिन फिर हमने हिम्मत जुटाई, मन को साधा, नया संकल्प लिया और प्लास्टिक की रिसाइकल बोरी बनाना शुरू कर दिया।